B-2
L-13
Ancient India

वैदिक संस्कृति

उत्तर वैदिककालीन आर्थिक जीवन

- उत्तर वैदिककाल ⇒ लोहे की खोज

⇓

लोहे को गलाने की तकनीक,
लोहे के हल तथा फाल का विकास

⇓

गंगा घाटी में जल की उपलब्धता के
कारण गहरी जुताई संभव

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अधिशेष उत्पादन → व्यापार-वाणिज्य को बढ़ावा मिला

गैर-कृषक गतिविधियाँ प्रारंभ → व्यापार-वाणिज्य को बढ़ावा मिला

⇓

श्रेणियाँ तैयार हुई

⇓

नगर अस्तित्व में आने लगे (600 ई.पू.)

⇓

द्वितीय नगरीकरण

⇓

16 महाजनपदों का उदय

* उत्तर वैदिक काल में जौ के साथ-साथ अन्य फसल जैसे- चावल (व्रीहि), उड़द (माष), गेहूं (गोधूम) आदि का उल्लेख मिलता है।

* उत्तर वैदिक काल में भूमि पर व्यक्तिगत अधिकार की भावना धीरे-2 मजबूत होती जा रही थी।

* ऋग्वैदिक काल में लौंग मुख्यतः जौ उपजाया करते थे लेकिन उत्तर वैदिककाल में मुख्य फसल धान और गेहूं हो गई।

* उत्तर वैदिक काल के लोग 4 प्रकार के मृदभांड से परिचित थे।

1) काले एवं लाल मृदभांड
2) काले रंग के मृदभांड
3) चित्रित धूसर मृदभांड (उत्तर वैदिक काल की विशेषता)
4) लाल भांड (सबसे अधिक प्रचलित)

उद्योग -

* शिल्पियों का उदय उत्तर वैदिक काल के आर्थिक जीवन की अन्य विशेषता थी।

* विभिन्न व्यवसायों के विवरण में पुरुषमेध सूक्त में मिलता है। जैसे- रथकार, धातुशोधक, बढ़ई, स्वर्णकार, चर्मकार, कुम्हार आदि

* शतपथ ब्राह्मण में मछली प्रथा का पहली बार उल्लेख मिलता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

* उत्तर वैदिक कालीन प्रमुख मुद्राएं शतमान, निष्क, पाद कृष्णल आदि थी।

इस काल में मुद्रा का विकास हो चुका था, परन्तु लोग दैनिक उपयोग हेतु वस्तुओं का विनिमय करते थे।

(शतमान) → चांदी का सिक्का
(निष्क) → सोने का आभूषण

* पाद और कृष्णल माप की इकाईयां थी

धार्मिक जीवन

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* उत्तर वैदिक काल में यज्ञ अब मूल आधार हो गया। अब अनेकानेक अनुष्ठान और विधियां प्रचलित हो गई।
* इन्द्र और अग्नि देव का स्थान प्रजापति ने ले लिया था और अब इस काल में यह सर्वोच्च देवता हो गये। इनकी संकल्पना सृष्टि के निर्माता के रूप में माना गया।
* विष्णु को सर्वसंरक्षक के रूप में माना गया।
* ऋग्वैदिक काल में पूषण पशुओं के देवता थे जो उत्तर वैदिक काल में शूद्रों के देवता हो गये।
* रुद्र इस काल में महत्वपूर्ण देवता बन गये और उत्तर वैदिक काल में इनकी पूजा शिव के रूप में होने लगी।
* इस काल में देवताओं के प्रतीक के रूप में कुछ वस्तुओं की भी पूजा प्रारंभ हुई अर्थात कुछ प्रतीक चिन्हों की भी पूजा होने लगी।

* इस काल में मूर्तिपूजा का आभास मिलने लगता है
* षड्दर्शन मिलते हैं

आस्तिक

(1) सांख्य : (कपिल → सांख्यकारिका) प्राचीनतम

(2) न्याय : (गौतम → न्यायसूत्र)

(3) योग : (पतंजलि → योगशास्त्र)

(4) वैशेषिक : (कणाद)

(5) पूर्व मीमांसा : (जैमिनी)

(6) उत्तर मीमांसा : (बादरायण → ब्रह्मसूत्र)

↓ टीका

रामानुजाचार्य (श्रीभाष्य)

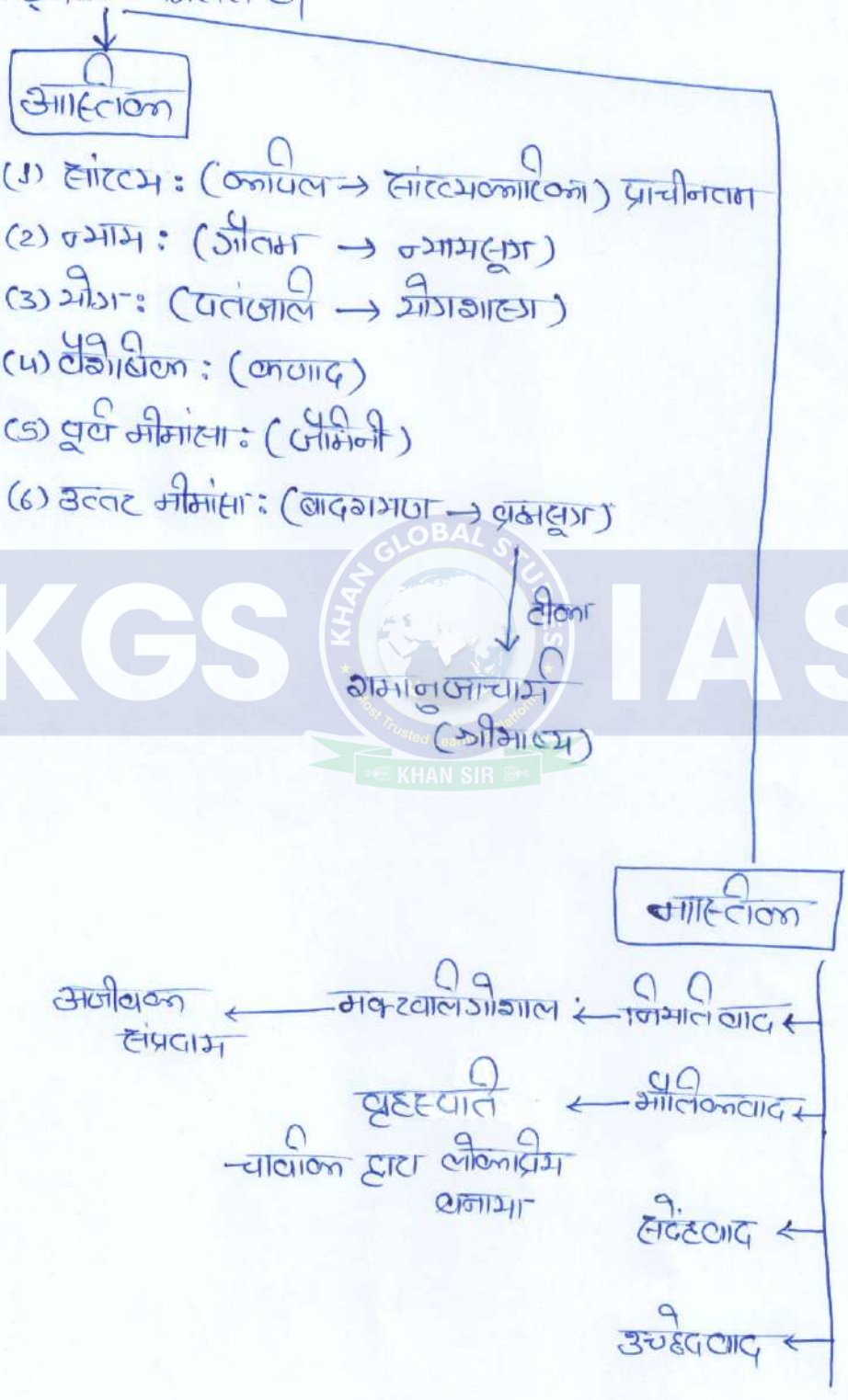

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

नास्तिक

- नियतिवाद → मक्खलि गोशाल → आजीवक संप्रदाय
- भौतिकवाद → बृहस्पति
  चार्वाक द्वारा लोकप्रिय बनाया
- संदेहवाद
- उच्छेदवाद